**भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा**
**एम.ए. हिन्दी (द्वितीय सेमेस्टर)**
**अनिवार्य पेपर – 1**
**दत्त कार्य – 1**

**कुल अंक – 15**

**नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। सभी प्रश्नो के समान अंक है।**

प्रश्न 1: निम्नलिखित अति लघुउत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

अ) पाणिनी का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

ब) राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की स्थिति स्पष्ट कीजिए।

स) बंगला भाषा का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

द) क्रिया विशेषण किसे कहते हैं? इसके कितने भेद हैं?

ई) हिन्दी का जन्म अपभ्रंश के किस भेद से हुआ है?

**खण्ड एक**

**प्र0** प्राचीन भारतीय भाषा विज्ञान के इतिहास को स्पष्ट करते हुए पाणिनी परवर्ती कालीन भाषा विज्ञान पर विस्तार पूर्वक लेख लिखिए।

अथवा

आधुनिक हिन्दी भाषा विज्ञान पर प्रकाश डालिए।

खण्ड दो

प्र0 3 मानक हिन्दी की ध्वनियाँ कौन सी है? विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

अथवा

देश के राष्ट्रीय आन्दोलनों में हिन्दी भाषा का क्या योगदान है?

खण्ड तीन

प्र0 4 लिंग वचन और कारक व्यवस्था के संदर्भ में हिन्दी के क्रिया रूपों में होने वाले परिवर्तनों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

शब्द रचना में उपसर्ग व प्रत्यय की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

खण्ड चार

प्र0 5 हिन्दी के प्रचार–प्रसार में किन–किन संस्थाओं का विशिष्ट योगदान है? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

हिन्दीत्तर भारतीय भाषाओं में मराठी, पंजाबी और तमिल का सामान्य परिचय दीजिए।

## भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा
## एम.ए. हिन्दी (द्वितीय सेमेस्टर)
## अनिवार्य पेपर – 1
## दत्त कार्य – 2

**कुल अंक – 15**

**नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। सभी प्रश्नो के समान अंक है।**

प्रश्न 1: निम्नलिखित अति लघुउत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

अ) पाणिनी पूर्व के भाषा विज्ञान पर नोट लिखो।

ब) 'निरूक्त' पर नोट लिखो।

स) मानक हिन्दी और खड़ी बोली में अंतर स्पष्ट करें।

द) अप्यय किसे कहते हैं?

ई) संधि व समास में अंतर बताइये।

**खण्ड एक**

प्र0 2 प्राचीन भारतीय भाषा विज्ञान के इतिहास पर आलोचनात्मक टिप्पणी करें।

अथवा

आधुनिक हिन्दी के भाषा विज्ञान के इतिहास पर आलोचनात्मक के अन्तर को विस्तारपूर्वक बताइये।

**खण्ड दो**

प्र0 3 मानक हिन्दी व खड़ी बोली के अन्तर को विस्तारपूर्वक बताइये।

अथवा

राजभाषा के रूप में हिन्दी की संवैधानिक स्थिति स्पष्ट कीजिए।

**खण्ड तीन**

प्र0 4 हिन्दी की व्याकरणिक संरचना में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया व क्रिया विशेषण का क्या योगदान है?

अथवा

हिन्दी शब्द संरचना में संधि व समास का क्या योगदान है?

**खण्ड चार**

प्र05 हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभिन्न व्यक्तियों के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

हिन्दीतर भारतीय भाषाओं में गुजराती, बंगला व मालयालम का सामान्य परिचय दीजिए।

# भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धान्त
## एम.ए. हिन्दी (द्वितीय सेमेस्टर)
## अनिवार्य पेपर – 2
## दत्त कार्य – 2

**कुल अंक – 5**

**नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। सभी प्रश्नो के समान अंक है।**

प्रश्न 1: निम्नलिखित अति लघुउत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

अ) भरतमुनि ने रसों की संख्या कितनी मानी है?

ब) अलंकार सिद्धान्त के प्रवर्तक आचार्य कौन हैं?

स) 'काव्यालंकार' के लेखक कौन हैं?

द) ध्वनि सिद्धान्त के जन्मदाता कौन हैं?

ई) औचित्य सिद्धान् के प्रर्वतक कौन थे?

**खण्ड एक**

**प्र0** काव्य हेतु पर प्रकाश डालिए।

अथवा

काव्य भेद का स्पष्ट कीजिए।

खण्ड दो

प्र0 3 रस के अंग (अवयव) को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

साधारीकरण के सिद्धान्त को स्पष्ट कीजिए।

खण्ड तीन

प्र0 4 अलंकारों के वर्गीकरण को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

काव्य गुणा पर प्रकाश डालते हुए काव्य में गुणों का स्थान निर्धारित कीजिए।

खण्ड चार

प्र0 5 ध्वनि सिद्धान्त सम्बन्धी आनंदवर्धन की स्थापनाएं स्पष्ट कीजिए।

अथवा

औचित्य के भेद एवं उपभेद को स्पष्ट कीजिए।

# भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धान्त

## एम.ए. हिन्दी (द्वितीय सेमेस्टर)

## अनिवार्य पेपर – 2

## दत्त कार्य – 1

**कुल अंक – 5**

**नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। सभी प्रश्नो के समान अंक है।**

प्रश्न 1: निम्नलिखित अति लघुउत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

अ) सर्वप्रथम रस का विस्तृत विवेचन किसने किया?

ब) नाट्शास्त्र किसकी रचना है?

स) 'काव्य प्रकाश' किसकी रचना है?

द) 'सात्यि दर्पण' के रचियता कौन हैं?

ई) 'रीति' को काव्य की आत्मा किस आचार्य ने माना है?

### खण्ड एक

प्र0 2 काव्य प्रयोजन पर प्रकाश डालिए।

अथवा

रीति सम्बन्धी वामन की स्थापनाएँ पर प्रकाश डालिए।

### खण्ड दो

प्र0 3 रस सिद्धान्त, भरतमुनि के रस निष्पति सम्बन्धी चार आचार्यों के मतों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

सहृदय की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

### खण्ड तीन

प्र0 4 अलंकार सिद्धान्त की स्थापनाएँ पर प्रकाश डालिए।

अथवा

काव्य लक्षण पर प्रकाश डालिए।

### खण्ड चार

प्र05 वक्रोक्ति सिद्धान्तः वक्रोकित सम्बन्धी कुकन्त की स्थापनाएँ स्पष्ट कीजिए।

अथवा

ध्वनि के आधार पर काव्य के भेद स्पष्ट कीजिए।

## हिन्दी कथेत्तर साहित्य
## एम.ए. हिन्दी (द्वितीय सेमेस्टर)
## अनिवार्य पेपर – 3
## दत्त कार्य – 1

**कुल अंक – 15**

**नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। सभी प्रश्नो के समान अंक है।**

प्रश्न 1: निम्नलिखित अति लघुउत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

अ) 'श्रद्धा और भक्ति' निबन्ध का सार लिखिए।

ब) 'अशोक के फूल' निबन्ध का प्रतिपाघ स्पष्ट कीजिए।

स) बाल मुकुन्द गुप्त की भाषा–शैली पर नोट लिखो।

द) हरिवंश राय बच्चन की सामाजिक चेतना स्पष्ट कीजिए।

ई) 'बसंत आ गया है' निबन्ध का सार संक्षेप में लिखिए।

### खण्ड एक

प्र0 2 "आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एक सफल मनोवैज्ञानिक निबंधकार हैं।" इस कथन की विस्तारपूर्वक समीक्षा कीजिए।

अथवा

ललित निबंधकार के रूप में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की भूमिका निर्धारित कीजिए।

### खण्ड दो

प्र0 3 बालमुकुन्द गुप्त की व्यंग्य शैली पर विस्तारपूर्वक लिखिए।

अथवा

'आशा का अन्त' बालमुकुन्द गुप्त का एक सफल व्यंग्य प्रधान लेख है।" समीक्षा कीजिए।

### खण्ड तीन

प्र0 4 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' आत्म–कथात्मक साहित्य की एक सफल कृति है। समीक्षा कीजिए।

अथवा

"हरिवंश राय बच्चन" एक सफल आत्म–कथाकार हैं।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

प्र05 निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या करें।

अ) सभ्यता की वृद्धि के साथ–साथ ज्यों–ज्यों मनुष्य के व्यापार बहुरूपी और जटिल होते गए त्यों–त्यों उसके मूल रूप बहुत कुछ आच्छन्न होते गए। भावों के आदिम और सीधे लक्ष्यों के अतिरिक्त और–और लक्ष्यों की स्थापना होती गई। वासनाजन्य मूल व्यापारों के सिवा बुद्धि द्वारा निश्चित व्यापारों का विधान बढ़ता गया। इस प्रकार बहुत से ऐसे व्यापारों से मनुष्य घिरता गया जिससे उसके भावों का सीधा लगाव नहीं।

अथवा

भारतवर्ष के इस राष्ट्रीय संवत् के सात असुरों, यवनों शकों और आर्यों की दीर्घ साधना से उपलब्ध ज्ञानों की स्मृति जुड़ी हुई है। वह ईसाईयों और यहूदियों के सांस्कृतिक संघर्ष की याद दिला जाता है और प्रतिवर्ष ऊँचे गले से घोषणा कर जाता है कि मनुष्य ही महान् है।

ब) "आपने माई लार्ड। जब से भारत में पधारे हैं, बुलबुलों का स्वपन ही देखा है या सचमुच कोई करने योग्य काम भी किया है? खाली ख्याल ही पूरा किया है या यहाँ की प्रजा के लिए भी कुछ कर्त्तव्यपालन किया है।

**अथवा**

इस समय भारतवासी यह सोच रहे हैं कि आप क्यों आते हैं और आप जानते हैं कि आप क्यों आते हैं? यदि भारतवासियों का वश चलता तो आपको न आने देते और आपका वश चलता तो और भी कई सप्ताह पहले आ विराजते। पर दोनों और की बाग किसी और के हाथ में है।"

# हिन्दी कथेत्तर साहित्य

## एम.ए. हिन्दी (द्वितीय सेमेस्टर)

## अनिवार्य पेपर – 3

## दत्त कार्य – 2

**कुल अंक – 15**

**नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। सभी प्रश्नो के समान अंक है।**

प्रश्न 1: निम्नलिखित अति लघुउत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

अ) 'भाव या मनोविकार' निबन्ध का सार लिखो।

ब) 'कविता क्या है' निबन्ध का प्रतिपाद्य स्पष्ट करो।

स) 'बसन्त आ गया है' की भाषा–शैली पर नोट लिखो।

द) मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है की सामाजिक चेतना बताइए।

ई) हरिवंश राय बच्चन की भाषा शैली पर नोट लिखो।

### खण्ड एक

प्र0 2 लज्जा और ग्लानि निबन्ध का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

अथवा

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की सामाजिक चेतना पर टिप्पणी कीजिए।

### खण्ड दो

प्र0 3 'शिवशंभू पर चिटठा' पर आलोचनात्मक टिप्पणी कीजिए।

अथवा

बालमुकून्द गुप्त जी की भाषा शैली पर विस्तार से चर्चा कीजिए।

### खण्ड तीन

प्र0 4 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' काव्य सौन्दर्य का मूल्यांकन कीजिए।

अथवा

"हरिवंश राय बच्चन" की भाषा शैली पर आलोचनात्मक टिप्पणी लिखें।

प्र05 निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या करें।

अ) वस्तु सत्य बड़ा क्रूर कठोर और निर्मम होता है और एक तरह से उसका ऐसा होना ठीक ही है। वह हमारे सामने एक स्थूल स्थिति प्रस्तुत करता है और कहता है कि इसका सामना करें। हम करना चाहें, हिचकें–झिझकें, टाल–मटोल

करें तो वह हमें विवश कर देना भी जानता है, उसमें यह शक्ति न होती तो हममें से बहुत से स्वप्न और कल्पना की अफीम खाये पड़े रहते।

अथवा

कला अनुभूति का किसी इन्द्रिय ग्राह्म माध्यम में रूपान्तरण है। यह रूपान्तरण ही वह जादू है जो अनुभूतियों को मस्तिष्क के उस स्तर पर उठाकर, जहाँ उसका आस्वादन किया जाता है। यह आस्वादन की प्रक्रिया कहीं पहुंचकर आनंद–संतोषप्रदन और कहीं पहुंचकर शक्तिदामनी हो जाती है।

ब) दुःख वर्ग में जो स्थान भय का है, वही स्थान आनन्द के वर्ग में उत्साह का है। भय में हम प्रस्तुत कठिन स्थिति के निश्चय से विशेष रूप में दुखी और कभी–कभी उस स्थिति से अपने को दूर रखने के लिए प्रयत्नवान भी होते हैं। उत्साह में हम आने वाली कठिन स्थिति के भीतर साहस के अवसर के निश्चय द्वारा प्रस्तुत कर्म–सुख की उमंग में अवश्य प्रयत्नवान होते है। उत्साह में कष्ट या हानि सहने की दृढ़ता के साथ–साथ कर्म में प्रवृत होने के आनन्द की उमंग का नाम उत्साह है। कर्म–सौन्दर्य के उपासक ही सच्चे उत्साही कहलाते हैं।

**अथवा**

श्रद्धा स्वयं ऐसे कर्मी के प्रतिकार में होती है, जिनका शुभ प्रभाव अकेले हम पर नहीं बल्कि सारे मानव समाज पर पड़ सकता है। श्रद्धा एक ऐसी आनंद पूर्ण कृतज्ञता है जिसे हम केवल समाज के प्रतिनिधि के रूप में प्रकट करते हैं। सदाचार पर श्रद्धा और अत्याचार पर क्रोध या घृणा प्रकट करने के लिए समाज ने प्रत्येक व्यक्ति कोप्रतिनिधित्व प्रदान कर रखा है।

# भक्ति एवं रीतिकालीन काव्य

## एम.ए. हिन्दी (द्वितीय सेमेस्टर)

## अनिवार्य पेपर – 4

## दत्त कार्य – 1

**कुल अंक – 15**

**नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। सभी प्रश्नो के समान अंक है।**

प्रश्न 1: निम्नलिखित अति लघुउत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

अ) कबीर ने गुरू की क्या महत्ता बताई है?

ब) जायसी की सौंदर्य चेतना का उदाहरण बताओ।

स) सूरदास की रचना में प्रकृति दर्शन स्पष्ट करो।

द) रामचरित मानस की भाषा शैली पर टिप्पणी लिखो।

ई) बिहारी की सौंदर्य चेतना के दो उदाहरण बताओ।

**खण्ड एक**

प्र0 2 कबीर की भाषा शैली पर विस्तार से चर्चा करो।

अथवा

कबीर की सामाजिक भावना पर विस्तार से चर्चा करो।

**खण्ड दो**

प्र0 3 सूरदास की विरह चेतना का उदाहरण सहित परिचय दीजिए।

अथवा

तुलसीदास की भक्तिभावना पर विस्तार से चर्चा करो।

**खण्ड तीन**

प्र0 4 रीतिकालीन कवि देव के पदों का परिचय दीजिए।

अथवा

रीतिकालीन कवि भूषण के पदों का परिचय दीजिए।

**खण्ड चार**

प्र05 सप्रसंग व्याख्या करें।

अ) खेलत मानसरोवर गई। जाइ पालि पर ठाड़ी भई
देखि सरोवर रहसहिं केली। पदुभावति सौं कहहिं सलेली।।

अथवा

एक दिवस कौनिउं तिथि आई। मानसरोदक चली अन्हाई।
पदुमावति सब सखीं बोलाइ। जनु फलवारि सबै चलि आई।

ब) दसन दामिनी कोकिली भाषीं। मौहें धनुक गगन लै राखीं
नैन खंजन– हुई केलि करेहीं। कुछ नारंग मधुकर रस लेहीं।

अथवा

पिउ बियोग अस बाउर जीऊ। पपिहा तस बोलै पिउ पीऊ।
अधिक काम दगधै सो रामा। हरि जिउ लै सो गएउ पिय नामा।

भक्ति एवं रीतिकालीन काव्य
एम.ए. हिन्दी (द्वितीय सेमेस्टर)
अनिवार्य पेपर – 4
दत्त कार्य – 2

कुल अंक – 15

नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। सभी प्रश्नो के समान अंक है।

प्रश्न 1: निम्नलिखित अति लघुउत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
अ) 'बीजक' का परिचय दीजिए।
ब) जायसी का संक्षिप्त जीवन–परिचय दीजिए।
स) सूरदास की रचनाओं के नाम लिखिए।
द) रामचरित मानस का संक्षिप्त परिचय लिखिए।
इ) रीतियुक्त काव्यधारा का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।
ई) धनानन्द की भाषा शैली नोट लिखो।

खण्ड एक

प्र0 2 कबीर की प्रासांगिकता का उल्लेख करो।

अथवा

जायसी की प्रेम भावना पर प्रकाश डालिए।

खण्ड दो

प्र0 3 सूरदास की भक्ति–भावना का परिचद दीजिए।

अथवा

तुलसीदास के काव्य में लोक मंगल की भावना को स्पष्ट कीजिए।

खण्ड तीन

प्र0 4 'धनानन्द' स्वच्छन्दतावादी कवि हैं कैसे?

अथवा

बिहारी की बहुज्ञता को स्पष्ट कीजिए।

खण्ड चार

प्र05 सप्रसंग व्याख्या करें।
अ) नैनां अंतरि आव तूं, ज्यौं हौं, नैंन झंपेउं।
नां हौं देखौं और वौ, नां तुम देखन देउं।।

अथवा

तब अंकन दै गोरा मिला। तूँ राजहिं लै चलु बादिला।
पिता मेरे जो सारें साथें मीचु न न देइ पूत के माथे।।
ब) जोग ठगौरी ब्रज न बिकैहें
यह व्यौपार तिहारौं उथो ऐसेई फिर जैहे।
जापै लै आए मधुकर ताके उर न समेहै।
दाख छांडिकै कटुक निबौरी को अपने मुख से है?

अथवा

नरनारि उथारि सया महुँ होत पियोपदु, सोच दरयो मनको।
प्रहलद–निषाद–निवारन, बारन–तारन, मीत अकारन को।।

**कबीरदास एक विशेष अध्यचयन**

**एम.ए. हिन्दी (द्वितीय सेमेस्टर)**

**वैकल्पिक – 1**

**दत्त कार्य – 1**

**कुल अंक – 15**

**नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। सभी प्रश्नो के समान अंक है।**

प्रश्न 1: आया था संसार में, देषण कौ बहु रूप
कहै कबीरा संत हौ, पड़ि गया नजर अनूप।।

अथवा

कबीर हरि रस भौं पिया बाकी रही न थाकि।
पाका कलस कुँभार का, बहुरि न चढ़हि चाकि।

प्र02 चलन चलन सब को कहत हैं, नाँ जानों बैकुंठ कहाँ है
जोजन एक प्रमिति नहिं जानै, बातन ही बैकुंठ बषानै।
जब लग है बैकंठु की आसा, तब लग तहाँ आप नहिं जइये।
कहै कबीर बहुत कहिये काहि, साध संगति बैकुंठहि आहि

अथवा

बहुत दिनन थै मैं प्रीतम पाये, भाग बड़े घरि बैठे आये।।
मंगलचार माँहि मन राखौं, राम रमाँइण रमना चाषौं।
मंदिर मँाहि मन राखौं, ले सुतो अपना पीव पियारा।।
मैं रनि राती जे निधि पाई, हमहिं कहाँ यह तुमहि बड़ाई।।
कहै कबीर मैं कछु न कीन्हा सखी सुहाग मोहि दीन्हा।।

प्र03 कबीरदास की काव्यगत विशेषता पर प्रकाश डालिए।

अथवा

कबीरदास के निर्गुण का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

प्र0 4 कबीरदास की भक्ति भावना को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

कबीरदास की प्रासंगिता को स्पष्ट कीजिए।

प्र 05 कबीरदास के रहस्यवाद पर प्रकाश डालिए।

अथवा

कबीरदास एक क्रांतिकारी कवि थे स्पष्ट कीजिए।

## कबीरदास एक विशेष अध्यचयन
## एम.ए. हिन्दी (द्वितीय सेमेस्टर)
## वैकल्पिक पेपर –1
## दत्त कार्य – 2

**कुल अंक – 15**

**नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। सभी प्रश्नो के समान अंक है।**

प्रश्न 1: सुरति समाँणि निरति मैं, निरति रही निरधार
सुरति–निरति परचा भया, जब खुले स्वंय दुबार

अथवा

सुखिया सब संसार है, खायै अरू सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरू रोवे।।

प्र02 तू सकल गहगरा, सफ, सफा दिलदार दीदार
तेरी कुदरति किनहूँ न जानी, पीर मुरीद काजी मुसलमानी
दोषौ देव सुर नर गण गंधप ब्रह्मा देव महेसुर।।

अथवा

अलख निरंजन लखै न कोई निरमै निराकार है सोई
सुनि असथूल रूप नहीं रेखा, दृष्टि अदृष्टि छिप्पयौ नहीं पेरू।
बरन अबरन साहि नहीं मधे, कथ्यौ न जाई अहि अकथे

प्र03 कबीरदास के जीवन व कृतित्व पर विचार कीजिए।

अथवा

कबीरदास की दार्शनिक चेतना को स्पष्ट कीजिए।

प्र0 4 कबीरदास की काव्य–कला का उल्लेख कीजिए।

अथवा

कबीरदास के विद्रोह और समाज दर्शन को स्पष्ट कीजिए।

प्र 05 कबीरदास की दार्शनिक चेतना को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

कबीरदास की उल्टबासियें में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

**सूरदास एक विशेष अध्ययन**
**एम.ए. हिन्दी (द्वितीय सेमेस्टर)**
**वैकल्पिक पेपर – 2**
**दत्त कार्य – 1**

**कुल अंक – 15**

**नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। सभी प्रश्नो के समान अंक है।**

प्रश्न 1: चरन–कमल बंदौ हरि–राबू
जाकी कृपा पशु गिरि लंघे– अँधे को सब कुछ दरसाई
बहिरौ सुनै– गूँगा पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराइ
सूरदास स्वामी ककनामय, बार–बार बंदौ तिहिंपाई।।

अथवा

गुरू बिनु ऐसी कौन करे
माला–तिलक मनोहर बाना, लै सिर छत्र धरै
भवसागर तैं बूढ़त राखै, दीपक हाथ धरै
सूर स्याम गुरू ऐसौ समरथ, छिन मै ले उधरै

प्र02 कहौ कहाँ तैं आए हो
जानति हौ अनुमान आपनै, तुम जदुनाथ पठांए हौ
बैसेइ बसन, बरन तन सुंदर, बेइ भूषण सजि ल्याए हौ
लै सरबसु सँग स्याम सिधारै, अब का पर पहिराए हौ
अहो मधुप एकै मन सबकौ, सु तौ उहाँ लै छात्र हौ
मधुबन की मानिनी मनोहर, तही जात जहँ भाए हौ
सूर जहाँ लौ स्याम गात है जानि भले करि पाए हो।

अथवा

ऊधौ मन माने की बात
दाख छहारा छाँड़ि अमृत फल, विष कीरा विष खात
ज्यौं चकोर कौं देइ कपूर कोउ, तजि अंगार अघात

मधुप करत घर कोरि काउ मैं, बंधत कमल कैं पात
ज्यौं पतंग हित जानि आपनौ, दीपक सौं लपटात
सूरदास जाकौ मन जासौं, सोई ताहि सुहात।

प्र0 3 सूरदास के जीवन व कृतित्व पर विचार कीजिए

अथवा

सूरदास की भक्ति का स्वरूप बताते हुए उनकी भक्ति भावना का विवेचन कीजिए।

प्र0 4 सूरदास के काव्य में गीति तत्व पर प्रकाश डालिए।

अथवा

सूरसागर में चित्रित वियोग श्रृंगार की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

प्र0 5 सूरदास के भ्रमरगीत के प्रतिपाद्य पर एक लेख लिखिए।

अथवा

सूरकाव्य में व्यक्त प्रकृति चित्रण पर एक सुदीर्घ लेख लिखिए।

**सूरदास एक विशेष अध्ययन**
**एम.ए. हिन्दी (द्वितीय सेमेस्टर)**
**वैकल्पिक पेपर– 2**
**दत्त कार्य – 2**

**कुल अंक – 15**

**नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। सभी प्रश्नो के समान अंक है।**

प्रश्न 1: सोभा सिंधु न अंत लहीरी
नंद भवन भरिपूरि उमंग चलि, ब्रज की बीथिनि
फिरत बहीरी
देखी जाइ आज गोकुल मैं घरि–घरि बेचती
फिरति दहीरी
कहँ लगि कहाँ बनाइ बहुत बिधि, कहत न मुख
सहसहुँ निबही री
जसुमति उदर–अगाध–उदधि तैं, उपजी ऐसी सबनि
कही री
सूर स्याम प्रभु इंद्र–नील मनि, ब्रज बनिता उर लाई गहीरी

अथवा

मोहि कहति बुबति सच चोर
खेलत कहूँ रहौ मैं बाहर, चितै रहति सब मेरी ओर
बोलि लेति भीतर घर अपनैं, मुख चूमति, भरिलेति अँकोर
माखन हेरि देति आपनैं कर, कछु कहि बिधि सों करति निहोर

प्र02 बड़ी है राम नाम की ओट
सरन गएँ प्रभु काढ़ि देत नहिं करत कृपा कै कोट
बैठत सबै सभा हरि जूकी, कौन बड़ौ को छोट
सूरदास पारस कगे परसे, मिटति लोह की खोट।

अथवा

हमारे निर्धन के धन राम
चोर न लेत, घटत, नहि कबहूँ, आवत गाढ़ै काम
जल नहिं बूढ़त, अगिनि न दाहत है ऐसौ हरि नाम
बैकुंठ नाम सकल सुख–दाता, सूरदास–सुख–धाम

प्र0 3 सूरदास के वात्सल्य का वर्णन कीजिए।

अथवा

सूरदास के काव्य में चित्रित ब्रज संस्कृति एवं लोकतत्व पर प्रकाश डालिए।

प्र0 4 भ्रमरगीत काव्य परम्परा में सूरदास का स्थान निर्धारित कीजिए।

अथवा

भ्रमरगीत का सार लिखिए।

प्र0 5 सूरदास के काव्य में प्रकृति–चित्रण पर प्रकाश डालिए।

अथवा

सूरदास की दार्शनिक, चेतना को स्पष्ट कीजिए।

# प्रयोजन मूलक हिन्दी
## एम.ए. हिन्दी (द्वितीय सेमेस्टर)
## मुक्त वैकल्पिक पाठ्यक्रम– 1
## दत्त कार्य – 1

**कुल अंक – 15**

**नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। सभी प्रश्नो के समान अंक है।**

प्र0 1: निम्नलिखित अति लघुउत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

अ) राजभाषा किसे कहते हैं?

ब) राष्ट्रभाषा किसे कहते हैं?

स) हिन्दी दिवस कब मनाया जाता है?

इ) एक अच्छे सम्पादक के दोगुण लिखो।

ई) दृश्य व श्रव्य माध्यम ाक एक उदाहरण दीजिए।

खण्ड (एक)

प्र0 2 प्रयोजन मूलक हिन्दी का अर्थ, अवधारणा एवं स्परूप को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध रूप को स्पष्ट कीजिए।

खण्ड (दो)

प्र0 3 दृश्य एवं श्रव्य माध्यमों का परिचर दीजिए।

अथवा

पत्र लेखन का स्परूप एवं प्रकार को स्पष्ट कीजिए।

खण्ड (तीन)

प्र0 4 पत्रकारिता का स्वरूप एवं भेद को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

प्रेस सम्बन्धी कानून का वर्णन कीजिए।

खण्ड (चार)

प्र0 5 विज्ञापन का क्षेत्र विस्तार और महत्व को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

एक अच्छे प्रतिलेखक के गुण का वर्णन कीजिए।